शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

महाकवि वसंत त्र्यंबक शेवड़े प्रणीत कृतियों में न्याय सिद्धान्त : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ.हंसराज मीना (काबरा)
प्राचार्य
आराधना महाविद्यालय
इटावा, कोटा, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

मानव चेतना सतत् जिज्ञासु रही है, क्योंकि प्रकृति के रहस्यों की थाह पा लेना उसके समक्ष एक चुनौती है। मानव के इस वैचारिक मंथन से वेद-वेदांग, उपनिषद, पुराण, स्मृति तथा लौकिक रामायण एवं महाभारत जैसे अमृत कोष ग्रन्थ प्राप्त हुए सामाजिक न्याय व्यवस्था हेतु श्री भगवतगीता, विदुरनीति, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, भर्तृहरि-नीतिशतक, चाणक्य नीति, कौटिल्य-अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र इत्यादि नीतिपरक ग्रन्थों की उपादेयता सिद्ध होती हैं। पृथ्वी के भौगोलिक स्वरूप को पुराणो ने सात महाद्वीपों में विभाजित किया है। इन द्वीपों में जम्बू द्वीप को केंद्र माना गया है। इसी द्वीप मे भारत वर्ष अवस्थित है। महाकवि वसंत त्र्यंबक शेवड़े प्रणीत 'विंध्यवासिनी' महाकाव्य में भारत के प्राकृतिक भूगोल का विस्तार 50 देशान्तर 32 अक्षांशों में अवस्थित है। उत्तर में अरब सागर से लेकर वंशु नदी, सुमेरू पर्वत सीता नदी एवं हिमवत् कैलश से लेकर दक्षिण में रत्नाकर तथा लंका, पूर्व में आसाम व सवर्ण भूमि तथा पश्चिम में फारस की खाडी, ईरान एवं केस्पियन सागर इसकी सीमाएं निर्धारित करते हैं। महाकवि की न्यायपरक काव्यमय दृष्टि में भी देवता, ऋषि-मुनियों के माध्यम से निःसृत गंगा स्वरूप भारतीय आर्य संस्कृति की अवधारणायें प्रस्फुटित हुई हैं। महाकवि शेवड़े द्वारा श्रीमद् उदयनाचार्य प्रणीत 'न्यायकुसुमान्जलि' तत्वप्रकाशिका की व्याख्या करके सांसारिक त्रैदुःखों का अन्त कर चारित्रिक शुद्धि बल के द्वारा परमेश्वर की प्राप्ति संभव होना न्याय सिद्धान्त कथन की सार्थकता सिद्धि में अमृत तुल्य प्रतीत होती है। कवि ने शक्ति स्वरूपा श्री दुर्गा द्वारा असुर महिषासुर का अन्त करना, श्री कृष्णचरित एवं श्री मोतीबाबा जामदार रचित ग्रंथों मे संत वैशिष्ट्य जीवन पर प्रकाश डाला, जो उनके पारिवारिक संस्कारिक मूल्यों की देन है। अतः शेवड़े कालीन संस्कृति का आश्रय लेकार जीवन यापन करना श्रेष्ठकर होगा।

महाकवि शेवड़े : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

महाकवि वसंत त्र्यम्बक शेवड़े का परिवार आजादी पूर्व महाराष्ट्र प्रांत के सतारा नामक शहर मे निवास करता था और वहीं पर उनके परिजन महाराज छत्रपति शिवाजी के दरबार में सम्मानित पदों पर आरूढ़ थे। महाकवि का जन्म 2 अक्टूबर 1917 ई. बंबई में उनके ननिहाल में हुआ और निर्वाण तिथि 5 जुलाई 1999 ई॰ को डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी आवास पर चौखंभा प्रकाशन के पास वाराणसी में हुआ। उनके पितामह का

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नाम श्री लक्ष्मण त्र्यंबक शेवड़े एवं मातामह का नाम श्रीती विमला बाई था। पेशे से उनके पितामह पहले प्रधानाध्यापक, बाद मे अधिवक्ता, फिर नागपुर कोर्ट के जज पद पर शोभित हुये, जबकि उनकी मातामह भी बंबई हाई कोर्ट मे न्यायधीश थीं। अतः शेवड़े परिवार सुशिक्षित और सम्पन्न रहा है। महाकवि के ने नागपुर से प्राचीन नव्यन्याय व्याकरण, साहित्य और मीमांसा आदि के द्वारा एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। आपकी शिक्षा यद्यपि अँग्रेजी माध्यम हुई परंतु पारिवारिक सांस्कृतिक परंपरा का अनुकरण करते हुए उन्होंने पहले मराठी फिर संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया।[1] महाकवि शेवड़े ने 11 कृतियों का प्रणयन किया। उनके नाम निम्नानुसार हैं :

1 रघुनाथतार्किकशिरोमणिचरितम
2 वृत्तमंजरी,
3 विन्ध्यवासिनीविजयमहाकाव्यम
4 शम्भूमहाकाव्यम
5 स्तवमञ्जूषा
6 अभिनवमेघदूम
7 श्रीकृष्ण चरितम,
8 श्रीमतीबाबाजामदारचरितम
9 देवदेवेश्वरमहाकाव्यम
10 स्फोटतत्वनिरूपणतत्वप्रकाशिका
11 न्यायकुसुमान्जलेस्ततत्वप्रकाशिका व्याख्या

उन्हें उज्जैन में 'अभिनव कालिदास' पुरस्कार और पुणे में श्रीमंत नाना साहब पेशवा धार्मिक एवं आध्यात्मिक पुरस्कार दिया गया। इसके अतिरिक्त उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, केन्द्रीय संस्कृत अकादमी द्वारा कलिदास पुरस्कार, कलकत्ता स्थित 'हनुमान ट्रस्ट' द्वारा सम्मानित किया गया। 'श्री देवदेवेश्वर महाकाव्य' की रचना करने पर उन्हें श्री देवदेवेश्वर संस्थान, पुणे द्वारा सम्मानित किया गया। वैदर्भी रीति व प्रसाद गुण में लिखे हुए ग्रंथों को पढ़कर एवं सुन्कर सभी का हृदय प्रसन्नता से भर उठता है।

महाकवि का भौगोलिक उद्देश्य

भारतीय भौगोलिक वैशिष्ट्य को विश्व पटल पर सर्व उच्च प्रदर्शित करना अहम् भूमिका रही है।

प्राकृतिक भू-आकार - 'पर्यायवरण' शब्द का व्याकरण के अनुसार परि+आ+वृ+ ल्यूट् प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है, जिसका व्याकरण सम्मत अर्थ 'परितः आसमानतात् वृणोति इति तद्भावे पर्यायवरण' होता है। महाकवि शेवडे विरचित काव्यों में भारत के प्राकृतिक पर्यायवरण का परिचय इस प्रकार है - प्राकृतिक पर्यायवरण को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता हैं -

1 वायुमण्डल - (क) अधोमण्डल (ख) समतापमण्डल (ग) ओझोन मण्डल (घ) अयनमण्डल

भू-आकार किसी देश के भौतिक स्वरूप को प्रदर्शित करता है। वह जलवाहन प्रणाली के पोषक तत्वों का संवहन कर भूतल को संजीवनी प्रदान करता है। इस संजीवनी शक्ति के महात्म्य के कारण ही पुरातन काल में मानव सभ्यता का उद्भव विकास एवं पल्लवन इसकी गोद में सम्पन्न हुआ और जिसके कारण यह विश्व सुसंस्कृत हुआ है। वह जलवाह्म प्रणाली की सांस्कृतिक महिमा का वरदान देवभूमि भारत वर्ष को है, जो कि स्वर्गीय सुखों का आगार बनकर देवों को भी लालायित करता है। महाकवि शेवडे ने भारत के जलस्रोतवाहिनियों की महिमा एवं सांस्कृतिक गरिमा की हृदय स्तुति अपने काव्यों में यथा प्रसंग की हैं। काव्य मर्मज्ञ इसके विलास-दर्शन से भावविभोर होते हुये दिव्य आनंद प्राप्त करते हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वनस्पति जगत का मानव जीवन के साथ अटूट सम्बन्ध है। समस्त भारत फलदार छायादार पुष्प, पादप एवं लताओं से परिपूर्ण था। महाकवि की कृतियों को कलेवर वनस्पतियों की सुषमा एवं इनकी विधायिका से प्राप्त हुआ।

प्राणी-जगत् - कवि प्रकृति का एक कुषल चित्र अपनी कृतियों में चित्रण करना अपना कृतकार्य मानता हैं। उसकी प्रकृति में वनस्पति जगत एकत्र स्थित रहते हुये सुषमा विच्छरित करते हैं तो प्राणी-जगत् विभिन्न नैसर्गिक क्रियाओं द्वारा कवि की भावाभिव्यक्ति में सहायक बनता हैं। इन दोनों तत्वों का समन्वय किये बिना न तो कोई कवि सफल प्रकृति दृष्टा बन सकता है तथा न उन्हें समझे बिना कवि का कोई अध्ययन ही पूर्ण हो सकता हैं। अर्थात् महाकवि वसंत त्र्यंबक शेवड़े ने अपने विंध्यावासिनी महाकाव्य में भारत के विशाल रूप में प्राकृतिक पर्यावरण भू-आकार, जलस्रोत वनस्पति, प्राणी जगत पर विशेष प्रकाश डाला है।

संस्कृति धर्म विषयक महाकवि शेवड़े की काव्यमय दृष्टि विचार

मानव का सामूहिक रूप में निवास करना समाज कहलाता है। भगवान मनु प्रणीत 'मनुस्मृति का गहन अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि मानवचित्ताकार से साकार व निराकार परमेश्वर की शक्ति से जुड़ा हुआहै। धर्म शब्द का व्यापक अर्थ है यथा - कुलधर्म जातिधर्म देश धर्म आदि इसकी सीमाएं हैं। जीवन के नीति-नियम भी इसी धर्म के अन्तर्गत हैं। भगवान मनु ने इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर सत्य संयम अक्रोध आदि गुणें को धर्म के दस लक्षणों में माना हैं। 'धर्मचर धर्मान्नप्रमदितव्यम' आदि श्रुति वाक्यों से धर्म तात्पर्य अर्थ प्रकट होता हैं 2 तथा धर्म व्याकरण की दृष्टि से धृ धातु से मन प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है। महाभारत में धर्म का लक्षण इस प्रकार किया है- 'धारनाद धर्मत्याहु धर्मो वा धर्मो धारयति प्रजा 'आगे बताया है कि 'धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः'। अतः धर्म शब्द का धातुगत अर्थ धारण करना होता है। धर्म नित्य है और धर्म से ही अर्थ और काम की प्राप्ति होती है। भारतीय संस्कृति का आधार धर्म ही है यथा - अग्नि का धर्म उष्णत्व है यदि उष्णता न हो तो अग्नि की कोई सत्ता नहीं मानी जायेगी। विश्व विनाश धर्म त्याग से ही संभव है। इसलिये आदि कवि वाल्मीकि ने धर्म को चरित्र का पर्यायवाची माना है, तदनुरूप महाकवि वसंत त्र्यंबक शेवड़े ने भी आजीवन ब्रह्मचारी रहकर चारित्रिक बल द्वारा विश्व विजेता होने के मत का समर्थन किया है। साथ ही साथ 'विन्ध्यवासिनी विजयमहाकाव्य' में संगम तीर्थ स्थलों पर अवश्य स्नान करना धर्म कहा है ताकि धर्म का लोप न हो। इसलिये महाकवि शेवड़े ने माँ दुर्गा की अनन्य पूजा-अर्चना और स्तुति की थी। महाकवि शेवड़े के मत में संस्कृत, संस्कृति और धर्म ये चित्त भूमि में निवास करते हैं तथा धर्म बिना समाज को पंगु कह देना औचित्यपूर्ण है। यहाँ तर्कपूर्ण तथ्य है कि महात्मा बुद्ध ने मन से जीवन का विश्लेषण करते हुए यही निश्चय किया कि धर्म की नींव पर सृष्टि और मानव टिक सकता हैं। 'धम्मं शरणम् गच्छामि' का जब प्रचार हुआ तब धर्म का यही उच्च अर्थ था। अर्थात् किसी छोटे से मत में किसी सम्प्रदाय के लिये धर्म शब्द का प्रयोग बुद्ध व उनके शिष्यों को मान्य नही था।

श्री शेवडे की कृतियों में नैतिक कार्य

1 अतिथि सत्कार- विन्ध्यावीसिनीमहाकाव्यानुसार के प्रथम सर्गानुसार विंध्याचल एक नायक और

रेवा नदी नायिका के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन [3] नवम सर्ग में अगस्त्य मुनि के द्वारा विन्ध्याचल शिष्य का कल्याण करने हेतु कैलाश यात्रा करना, मुनि द्वारा उसके तट पर निवास करना और आशीर्वाद देना।[4] श्री कृष्ण भगवान जन्म के अवसर पर वसुदेव जी के द्वारा सूर्य कन्या विन्ध्यवासिनी का नाम लेकर नदी पार करते समय जगदम्बा की कृपा से सौ हाथ पानी भी दो चार हाथ ही गहरा रह गया। श्री शेवड़े की अद्भुत प्रतिभा द्वारा इन्हें सुव्यवस्थित किया गया है जो उनकी मौलिक कृति स्वीकार की जा सकती है।[5]

'अभिनव मेघदूत खण्डकाव्य में अल्कापुरी यात्रा संदेशक मेघ द्वारा क्षणभर रूककर स्नेहीमयी वाणी से किसानों के साथ वार्तालाप अवश्य ही करना तथा आशीर्वाद लेकर आगे बढना।[6]

2 रीति-रिवाज- बड़े भाई का पहले विवाह होना, स्नेहीजनों को तालाब तक विदा करना, जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त संस्कारों पर दृष्टि डालना, [6] भेंट खाली हाथ न जाने देना, दूषित वस्तुओं की शुद्धि अग्नि में डालकर करना [7], कष्टनिवारण हेतु संगम तीर्थ पर स्नान करना [8] और अनेक देवी-देवताओं की पूजा करना आदि।[9]

3. आचार व्यवहार की नैतिकता - महाकवि वसंत त्र्यंबक शेवड़े ने आदर्श प्रेम का चित्र प्रस्तुत किया है[10] तो दूसरी ओर शिवाजी जैसै छत्रपति सम्राटों के आदर्श चरित्र को भी प्रस्तुत किया हैं।[11] धर्मसम्मत न्यायदर्शन का आश्रय लेकर तो प्रकृति के सम्पूर्ण रहस्य का ही सूक्ष्म भेदी बनकर कायातन्तुभि सांस्कृतिक झगडों का ही अन्त कर दिया।[12] महापुरूषों के उज्ज्वल चरित्र को उजागर करके उन्होंने 'कवीश' की रक्षा की।[13] ईश्वर आदि पद सार्थक हैं और इसकी प्राप्ति के लिये वेदादि प्रामाणिक ग्रन्थों के अध्ययन को उद्देश्य बनाना चाहिये। यही लौकिक जीवन की दिनचर्या होनी चाहिये। कर्तव्य व अकर्तव्य कर्मों में विभक्त हुए कर्मों में से कर्तव्य कर्मों को अपनाना चाहिये। कथनी और करनी में एकरूपता होना चाहिये।[14]

महाकवि वसंत त्र्यंबक शेवड़े का जीवन स्वतन्त्रता के पूर्व राजशाही शासन मे बीता तथा शेष आजाद भारत भूमि में व्यतीत हुआ। इसलिये उनकी कृतियों मे पाश्चात्य एवं आधुनिक संस्कृत्यिों का सामंजस्य देखने मिलता है।

निष्कर्ष

महाकवि वसंत त्र्यंबक शेवड़े ने भारत विस्तार में जो सीमाएं निर्धारित की हैं तदनुसार उसमें भारत का मूर्तरूप समाहित है। संभवत: उन्होंने अपने जीवन में काफी पर्यटन किया होगा। महाकवि ने पौराणिक विभाजन स्वीकृत करते हुये भी भौगोलिक विशालता, इतिहास प्रसिद्ध महानता, राजनैतिक सबलता एवं सांस्कृतिक विराट के रूप में तपोभूमि भारत वर्ष की एक सुरम्य मनमोहक झांकी प्रस्तुत कर अपनी राष्ट्रीय जागरूकता का परिचय दिया। ऐसे कीर्ति स्तंभ कृतियों द्वारा भारत वर्ष का यशोगान सदैव अमर रहेगा। साथ ही महाकवि शेवड़े ने अपनी कृतियों मणियों में भारतीय संस्कृति की जो छवि प्रस्तुत की है, वह उनकी विराट प्रतिभा का उद्रेक ही माना जा सकता है। यदि औचित्य की दृष्टि श्री शेवड़े की कृतियों की समीक्षा की जाए तो वे निश्चय ही प्रसाद गुण सम्पन्न वैदर्भी रीति के समुपासक थे और उनकी काव्य कला भी सरस, रोचक व भाषा शैली की दृष्टि से भी प्रसंगानुकूल सिद्ध होती है। महाकवि शेवड़े की धार्मिक-न्यायपरक काव्यमय दृष्टि से भावी मानव पीढ़ी सदैव ऋणी होकर अभिप्रेरित रहेगी। महाकवि ने न केवल प्रकृति प्रदत्त दृष्टि अपनाई बल्कि सामाजिक अवचेतना,

सांस्कृतिक समरसता और राजनैतिक पटुता के साथ परमेश्वर की विधान युक्त न्याय प्रणाली की अभिप्रेरणा दी है।

उनके साहित्य का अवगाहन करने से भारत वर्ष की गौरव पूर्ण चंद्रिका के प्रकाश मे अभिवृद्धि होगी तथा अबोध पीढ़ी में भी सृष्टि के रहस्यों एवं मानवीय मूल्यों को जानने की जिज्ञासा पैदा होगी। महाकवि वसंत त्र्यंबक शेवड़े काव्यमयी दृष्टि आधारित भारतीय संस्कृति के दीपदान में तेल संवृद्धि करने में अनन्य अवदान रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 (क) शेवड़े, महाकवि वसंत त्र्यंबक सं डॉ. ब्रह्मानंद त्रिपाठी 1982 ई, 'विंध्यावासिनी विजय महाकाव्यम् चौखंभा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, (भूमिका पृष्ठ 9-10 कवि परिचय एवं कृतित्व

(ख) सन्दर्भ शोध पत्रिका से - श्री शेवडे महाकवि परिचय प्रधान सं. शुक्ल श्री कुबेरनाथ सह सं. द्विवेदी श्री व्रजवल्लभ, त्रेमासिक साररस्वती सुषमा शोध पत्रिका, वर्ष अंक 12/3-4 अंक, पृष्ठ 81-93 संवत 2014 श्री रघुनाथ तार्किक शिरोमणि चरित्,' प्रकाशक सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि वि वाराणसी

2 वर्मा डॉ. गायत्री सं. 1963 ई. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, महाकवि कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति, पृष्ठ 498

3 (क) निवास भूमिर्वनदेवतानां तपस्विनामाश्रमसन्निवेषः।
सोपान पंक्तिस्त्रिदशालस्य विन्ध्याभिधो राजति शैलराजः।। विन्ध्या/1/1

(ख) जैमिनिप्रभृतिभिर्मुनीश्वरैर्यज्ञकर्मविषये पुरस्कृतान्। न्यायमूलवचनैः सयुक्तिकै संशयानपहरन्तमादरात् ।। तत्रैव विन्ध्य.2/11

(ग) रंगतरंग मुदितान्तरंगा संस्पर्षमात्राद् विहितार्ति भंगा।
रेवाऽपि सेवाव्रतमाचरन्ती यत्पाद निर्णेजनमातनोति ।। तत्रैव विंध्य/1/18 (पृष्ठ 2)

(घ) निर्गत्य विन्ध्यभवनाद्भगवानगस्त्यः
शिष्यैः प्रायैः कतिनयैरनुगम्यमानः।
उल्लंघ्य पर्वततटानि सकाननानि
स्रोतस्वतीं पथि स वैत्रवतीमदर्ष ।। तत्रैव विंध्य 9/1(पृष्ठ 28)

(ङ) चतुः षष्टिः पीठान्यगपति सुतायाः क्षितितले
स्थितानि श्रीयंत्रो परम महितान्यागमविदाम् ।
विराजयन्ते, तेषु प्रथिततरमेत्राभीभुक्ने,
महापीठं विन्ध्याचल शिखर संस्थं विजयते ।। तत्रैव 'विंध्यविंध्य/9/74(पृष्ठ 32)

4 (क) शिवया शिवया जगतः प्रर्वितंतो
वसुधातिभार हरणाय दीक्षितः।
अवतार कार्यमवधार्य देवकी
जठरान्निशीथ उदियाय माधवः ।। तत्रैव 'विंध्य/13/60 (पृष्ठ 47)

(ख) सति तत्र नदीं परंविष्टेमात्रे शतहस्तिद्वयसं जलंतदीयम् ।
अभवज्जगम्बिकाप्रसादाच्चकितं पश्यत एव जानुदघ्नम् ।। विंध्य14/17(पृष्ठ 49)

5 अभि.मेघ.(पू.मेघ) 44

6 स्नातुं तत्र प्रभवसि न चेत्संगमे पुण्यनद्यो ।। अभि.मेघ.(पू.मेघ) 29

7 मार्तजगत्सृजसिपदमभव स्वरूपा।। शुम्भवध 14/2

8 स्वकान्त्यायः प्रत्यादिशति ।। स्तवमंजुषा.6/1

9 श्रीदुर्गानामोग्दीतिःपातकमखिलंनृणां हन्ति ।
ज्योस्त्नेव तिमिर पटलं दावाग्नि शिखा यथा महाविपिनम् ।। वृत्तमंझरी2/8

10 अभि.मेघ.(उ.मेघ) 39

11 गोब्रह्मणानां प्रतिपालनाय साक्षात्छिवो भूमितलावतीर्णः।
तुरूष्कसैन्यार्णवकुम्भयोनिस्तत्राऽऽविरासीच्छिवसार्वभौमः ।।श्रीदेवदेश्वर 1/29 पृष्ठ 22

12 (क) सापेक्षत्वात्दनादि त्वाद्वैचित्र्याद् विश्ववृत्तिः।
प्रत्यात्मनियमाद् भुक्तेरस्तिहेतुरलौकिकः।।
न्यायकुसुमांजलि1/4

(ख) कृत्स्न एव हि वेदोऽयं परमेश्वरगोचरः।
स्वार्थद्वारैव तात्पर्यं तस्य स्वर्गादिवद्विधौ।। स्तबक 5/16

13 (क) श्री मोतीबाबाजामदार खण्डकाव्य भूमिका पृष्ठ 3-4

(ख) आखण्डलःसहस्रक्षो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः।
यूयंविलोचनाः सर्वे वयं नयायैकलोचनाः।। श्री रघुनाथ 2/38

(ग) वसन्नवद्वीपपुरे शिष्याध्यापनतत्परः।
रघुनाथो न्यायशास्त्रै त्रिंशद्ग्रन्थान् व्यरीरचत् ।।श्री रघुनाथ 3/27

14 कृताकृत विभागेन कर्तृरूपव्यवस्थया ं
यत्न एव कृतिः पूर्वा परस्मिन् सैव भावना ।।
न्यायकुसुमान्जलि 5/9 कारिका

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.त्रिपाठी डॉ ब्रह्मानन्द, गोविंद सप्तऋषि सं1990 ई. अभिनव मेघदूत चौखंभा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

2 शेवड़े, महाकवि वसंत त्र्यंबक 1982 ई विंध्यावासिनी विजय महाकाव्यम, चौखंभा सुर प्रकाशन, वाराणसी

3 शेवडे श्री वसंत त्र्यम्बक, व्याख्याकार सं गोवर्धनदास खन्ना 1958 ई वृत्मंझरी आल इण्डिया रिपोर्टर मुद्रणालय, वाराणसी

4 शेवडे श्री वसंत त्र्यम्बक, तत्तवप्रकाशिका व्याख्याकार त्रिपाठी. डॉ ब्रह्मानन्द1994 ई. श्री शेषकृष्ण विरचित 'तत्व स्फोट विवेचनी 'चौखंभा सुरभरती प्रकाशन ,वाराणसी

5 त्रिपाठी डॉ ब्रह्मानन्द व्यास डॉ. भोलाशंकर 1984 ई 'शुंभवध महाकाव्य चौखंभा सुर भा प्रका वाराणसी

6 1 शेवड श्री वसंत त्र्यम्बक, 1985 ई, श्री कृष्ण चरित नागपुर प्रकाशन, नागपुर

2 शेवडे श्री वसंत त्र्यम्बक, 1990 ई, श्री मोती बाबा जामदार चरित नागपुर प्रकाशन, नागपुर

7 शेवडे श्री वसंत त्र्यम्बक रचियता, सं. वसन्त कृष्ण नूलकर भूतपूर्व प्राचार्य नेस वाडिया कोलेज ऑफ कॉमर्स पुणे, सह सं. त्रिपाठी डॉ ब्रह्मानन्द संस्कृत विभागाध्यक्ष दयानन्द महाविद्यालय वाराणसी 1993 'श्री देव देवेश्वर महाकाव्य, श्री देवदेवेश्वर संस्थान पुणे, महाराष्ट्र

8 शेवडे श्री वसंत त्र्यम्बक, तत्तवप्रकाशिका व्याख्याकार सं त्रिपाठी. डॉ ब्रह्मानन्द 1997 ई श्री मद उदयनाचार्य प्रणीत 'न्याय कुसुमांजलि' चौखंभा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

9 प्रधान सं. शुक्ल श्री कुबेरनाथ सह सं. द्विवेदी श्री व्रजवल्लभ त्रेमासिरकी, साररस्वती सुषमा शोध पत्रिका, वर्ष अंक 12/3-4 अंक, पृष्ठ 81-93 संवत 2014 'रघुनाथ तार्किक शिरोमणि चरित' प्रकाशक सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि वि वाराणसी